Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

मार्कण्डेय के उपन्यासों मे राजनीतिक चेतना

श्री शेक सलीम बाषा

हिन्दी प्राध्यापक, उस्मानिया कालेज, कर्नूल (आ.प्र.)

प्रस्तावना :

प्रेमचंद के पश्चातू हिन्दी उपन्यास पर किसी एक लेखक का प्रभाव न होने से और विभिन्न व्यक्तिगत सफल प्रयोग होने के कारण सन् 1936 से 1940 के युग को 'प्रेमचंदोत्तर युग' या 'प्रयोग काल' की संज्ञा दी गयी है। शेष 1950 से आजतक का युग ''समकालीन युग'' के नाम से पुकारा जाता है। इस युग के वैज्ञानिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवाद का विकास हुआ। व्यकितवादियों ने व्यक्ति को लक्ष्य और समाज के निमित बननेवाली विचारधारा को अपनाया। ''यह काल उपन्यासों की संख्या शिल्प की दृष्टि से विपुल विकास का युग रहा। आकार, सौष्ठव और अनुभव की गहराई प्राप्त करने के ध्येय से अनेक प्रयोग इस काल मे किये गये।'' हिन्दी के समकालीन उपन्यासकारों में कमलेश्वर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, हिमांशु जोशी, राजेन्द्र जोशी, राजेन्द्र अवस्थी, राही मासूम रजा, मन्नूभडारी, उषा प्रियंवदा, मनोहर श्याम जोशी और मार्कण्डेय आदि प्रमुख हैं।

मार्कण्डेय का जन्म 2 मई सन् 1930 में उत्तर प्रदेश के जैनपुर जिले के बराई नामक गाँव में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। मार्कण्डेय बहुमुखी प्रतिभाशाली कथाकार हैं। कहानियाँ की तुलना में मार्कण्डेय ने उपन्यास बहुत कम लिखे हैं। किंतु संख्या में कम होने के बावजूद वे मार्कण्डेय को एक प्रतिष्ठित कथाकार के रूप में सामने लाने में पूरी तरह सक्षम हैं।

मार्कण्डेय मूलतः ग्रामीण जीवन के कथाकार हैं। वे ग्रामीण का चित्रण करनेवाले उन कथाकारों से अलग हैं जो शहरी जीवन को भोगते हुए ग्रामीण जीवन में अपने उपन्यासों के लिए कथानक तलाश करते हैं। मार्कण्डेय ऐसे लेखक हैं जो ग्रामीण जीवन से पूरी तरह जुडे हुए हैं। गाँव के जीवन को उन्होंने देखा ही नहीं, भोगा भी है। गाँव अपने समूचे दुःख दर्दों के साथ उनके अंदर रचा बसा है। मार्कण्डेय का उपन्यास गहरी यथार्थ दृष्टि, व्यापक अनुभव तथा उनकी लेखनी के प्रमाण हैं। उनसे दो उपन्यास लिखे गये हैं।–सेमल के फूल और अग्निबीज ।

1. सेमल के फूल (सन् 1956)

''सेमल के फूल'' मार्कण्डेय का पहला उपन्यास है। उपन्यास की कथा का ताना–बना प्रेम और विवाह जैसे विषय को लिए हुए एक रोमांटिक भाव– भूमि पर बुना गया है। इसकी कथा एक प्रेम –कथा के रूप में सामने आती है। इसकी कथा नीलिमा और सुमंगल के प्रेम संबंधो पर आधारित है। समूची कथा नीलिमा की डायरी में लिखे हुए प्रसंगो का लेकर सामने आती है। नेमीचंद्र जैन के अनुसार ''सेमल के फुल'' में भी बडी धार है जो उस अनुभुति के साथ लेखक के गहरे तादात्मय के कारण उत्पन्न हुई है। इसीलिए 80 पृष्टों की यह कथा कहीं भी बहुत शिथिल नहीं पडती। भावना का एक सा तनाव आदि से अंत तक रहता है जो पाठक को एकदम भावाभिभूत कर देता है।'' सेमल के फुल'' उपन्यास की कथा भावुकता और करूण के संसार को ही हमारे सामने नहीं लाती बल्कि, जीवन की बुनियादी समस्याओं को भी उठाती है और उनके समाधान का प्रयास भी करती है।

2. अग्निबीज (सन् 1981)

'' अग्निबीज'' उपन्यास में व्यापक सामाजिक जीवन को आधार बनाया गया है। इसे मार्कण्डेय का प्रतिनिधि उपन्यास कहा जा सकता है। 'अग्निबीज'' स्वतंत्रता के बाद 53–54 के आसपास के ग्रामीण संदर्भो में उभरते पात्रों की सामाजिक–राजनीतिक चेतना की विकास यात्रा को रेखांकित करनेवाले कथानक का पहला उपन्यास है। उपन्यास में इस नई पीढी से संबंधित जिन चार पात्रों को प्रस्तुत किया गया है वे सुनीत, श्यामा, सागर और मुराद हैं। इनके माध्यम ये उपन्यासकार ने नयी पीढी की मानसिकता को, उनके द्वन्दों को कहीं खामोशी के माध्यम से, कहीं झुंझलाट के माध्यम से, कहीं आक्रोश के माध्यम से और कहीं तीव्र विरोध के माध्यम से उभारा है। अरूण महेश्वरी के शब्दों में ''घटनाएँ तो चरित्रों को एक ऐसे खेल में उतारने का कार्य करती हैं, जिससे यह चरित्र स्वाभाविक रूप से संबंध है। अर्थात चरित्रविघटन के चित्र को घुमाने के लिए बाहर से लाए दिखाई नहीं देते। यही वजह है कि अपनी विश्वसनीयता के चलते चरित्रों का पाठकों से एक स्वाभाविक और हार्दिक संबंध कायम जो जाता है।'' गाँव पर छाए हुए अंधकार में ये चारों युवा ज्योति दीप की चार बत्तियों की तरह है। इनमें गहराती नयी चेतना की लेखक ने सामाजिक यथार्थ के ही एक सशक्त अंग के रूप में उपस्थित किया है। इसका कथापालक स्वतंत्रता के बाद की इन सब गतिविधियों तथा ग्रामीण जीवन में होनेवाले परिवर्तनों को यथार्थ संदर्भ में उद्घाटित करता हुआ सामने आाता है। हिन्दी के प्रायः सभी मान्य समीक्षकों ने इस उपन्यास को मार्कण्डेय के रचनाकार की एक बहुत बडी उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया है। श्री मधुरेश ने इसे ''भारतीय ग्राम्य जीवन की वास्तविकता के उद्घाटन का उपन्यास'' कहा है, और श्री अरूण महेश्वरी ने इस उपन्यास को ''विगत तीन दशकों के हिन्दी उपन्यासों की अन्यतम श्रेष्ठ उपलब्धि'' घोषित किया है। श्री अखिलेश्ज्ञ ने ''इसे एक राजनीतिक उपन्यास कहा है''।

राजनीतिक चेतना

मार्कण्डेय की राजनीतिक चेतना मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है। यही कारण है कि वे समाजवादी समाज व्यवस्था के पक्षधर हैं। उनकी दृष्टि में आज की पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जन विरोधी और शोषणमूलक नीतियों के कारण एक अमानवीय भूमिका के रूप में कायम हैं। ऐसी व्यवस्था के वे समूल नाश के आाकाक्षी हैं। इस पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत श्रमजीवी वर्ग ही सर्वाधिक शेषण का शिकार है। मार्कण्डेय इस वर्ग को ही शोषण से मुक्त चाहते हैं। अपने कथा–साहित्य में उन्होंने इसी वर्ग को अपने हक की लडाई के लिए प्रेरित किया है। लोगों में राजनीतिक चेतना लाकर उनके जीवन को बेहतर बनाने की आकांक्षा रखते हैं। ''सेमल के फूल'' उपन्यास में सुमंगल गाँधीवाद के विचारधारा को नहीं मानते हैं। वह यही कहता है की ''गाँधी जी ने कोई व्यापक सामाजिक दर्शन नहीं दिया चाची। वैयक्तिक परिष्कार की धारण पूरे समाज के उत्थान में एक सशक्त इकाई तो बन सकती है पर वह सुरिथर मानवता के लिए विकासशील चरण– चिह्न नहीं छोड सकती''। यहाँ हम सुमंगल के उभरे हुए रूप को देख सकते हैं। '' अग्निबीज '' उपन्यास में राजनीतिक पार्टियों की कडी निंदा करते हैं। सब राजनीति पार्टियाँ अपने ही स्वार्थ मं डूबी हुई हैं। उन्हें न देश की चिंता हे और नहीं उस उस जनता की जिन्हें वे शासन की बागडोर सौंपती है। उनका कहना है कि 'कोई पार्टी तब तक जनता का विश्वास प्राप्त नहीं कर सकती, जब तक उसमें स्वतंत्र निर्णय लेने और उस पर दृढतापूर्वक कार्य करने की क्षमता न हो'' वे शोषितों के उस संगठन शक्ति के आग्रही हैं जो पूँजावादी व्यवस्था को समाप्त करने तथा एक नई व्यवस्था लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। उनका समूचा राजनीतिक चेतना इसी संदर्भ में प्रस्तुत भी हुआ है। उनके उपन्यासों में प्रस्तुत होनेवाले अनेक पात्र शोषित अथवा सर्वहारा वर्ग के संगठन की दिशा में सक्रिय दिखाई देते हैं। ' अग्निबीज' में हरगोन सिंह श्यामा, सुनीत, मुराद, सागर, छबिया, हुडदंगी और मुसई महतो में और ''सेमल के फूल'' उपन्यास में सुमंगल, अमर और अमृता के राजनीतिक चेतना को हम स्पष्ट रूप में देख सकते हैं।

संदर्भ–ग्रन्ध

1. शिवदान सिंह– हिन्दी उपन्यास के अस्सी साल, पृ 106–107
2. नेमीचंद्रजैन–बदलते परिप्रेक्षय, पृ 153–154
3.नयापथ–अंक 2. अक्तूबर–दिसंबर 1983–श्रीअरूण महेश्वरी का लेख, पृ–51
4.सनीचर–अंक–14(1982) –श्री मधुरेश, पृ.62
5. नायापथ–अंक 2, अक्तूबर–दिसंबर 1986–श्री अरूण महेश्वरी, पृ–62
6.पहल–अंक 23, अगस्त 1983, श्री अशिलेश, पृ.55
7.सेमल के फूल–मार्कण्डेय –पृ. 48
8. अग्निबीज–मार्कण्डेय –पृ. 171.